Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 3 | ISSN : 2582-0095
doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ

श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णित शिव से शिक्षा

दिवाकर कटारे
शोधार्थी, संस्कृत विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय,ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत।

Article Info
Article History
Accepted : 20 May 2024
Published : 30 May 2024
Publication Issue :
Volume 7, Issue 3
May-June-2024
Page Number : 28-30

शोध सारांश – श्रीमद्भागवत एक महापुराण के रूप में जगत प्रसिद्व है। यह महापुराण मूलतः श्रीकृष्ण के चरित्र कथाओं से परिपूर्ण है। किन्तु फिर भी इसमें शिव महिमा का का भी उल्लेख होता है। भगवान पशुपतिनाथ के चरित्रों से प्राणियों को नैतिक, सामाजिक, कौटूम्बिक अनेक प्रकार की शिक्षा में मिलती है। शिव का अर्थ ही कल्याण कारी, मंगलमय और मुक्ति प्रदाता है। जब समुद्र मंथन में निकलने वाले कालकूट विष का भगवान शंकर ने पान किया और अमृत देवताओं को दिया तब हमें शिव से यह शिक्षा मिलती है कि राष्ट्र के नेता और समाज एवं कुटुम्ब के स्वामी का यही कर्तव्य है। उत्तम वस्तु राष्ट्र के अन्यान्य लोगों को देनी चाहिये और अपने लिये परिश्रम, त्याग तथा कठिनाईयों को ही रखना चाहिये। शिवजी का कुटुम्ब भी विचित्र ही है।

रूद्रो मुण्डधरों भुजङ्गसहितों गौरी तु सद्भूषणा
स्कन्दः शम्भुसुतः षडाननयुतस्तुण्डी च लम्बोदरः।
सिंह क्रेलिममूषकं च वृषभस्तेषां निजं वाहन–
मिथ्यं शम्भुगृहे विभिन्नमतिषु चैक्यं सदा वर्तते।

भगवान् शंकर मुण्डमाला एवं सर्प धारण किये हुए रहते है और पार्वती सुन्दर–सुन्दर आभूषण धारण किये हुऐ रहती है। शंकर के पुत्र कार्तिकेय छः मुख वाले तथा गणेश लम्बी सूँड और बड़े पेट वाले है। भगवान शंकर आदि के अपने अपने वाहन बैल, सिंह मोर ओर मूषक भी आपस में एक–एक का भक्षण करने वाले हैं।
ऐसा होने पर भी भगवान शंकर के विभिन्न (परस्पर विरूद्व) स्वभाव वाले परिवार में सदा एकता रहती है। इसी प्रकार गृहस्थ में विभिन्न स्वभाव वालों के साथ अपने अभिमान और सुखभोग का त्याग करके दूसरों के हित और सुख का भाव रखते हुये आपस में प्रेम पूर्वक एकता रखनी चाहिये। यह हमें भगवानत् शंकर के कुटुम्ब से महत्वपूर्ण शिक्षा मिलती है।

मुख्य शब्द – श्रीमद्भागवतमहापुराण, रामचरितमानस, शिव, कुटुम्ब शिक्षा।

प्रस्तावना– श्रीमद्भागवत एक जीवन दर्शन है। यह मानव–जीवन का एक अनुपम, उत्कृष्ट एवं आदर्श मार्गदर्शक है। इसमें जीवन के प्रश्नों के उत्तर हैं, जीवन एवं जगत् की समस्याओं के समाधान हैं और सफल, सार्थक, समृद्ध एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने के व्यावहारिक सूत्र हैं। जीवन में समग्र सफलता एवं शांति का समन्वम केवल आध्यात्मिक विचारों एवं चिन्तन से ही सम्भव हो सकता है। जीवन में लौकिक सफलता एवं समृद्धि तथा मन की शान्ति प्राप्त होती रहे और हमारा जीवन पूर्णतः

Copyright © 2024 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

सार्थक बने, इसके लिये हमें समुचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। ऐसा मार्गदर्शन केवल श्रीमद्भागवत महापुराण के अध्ययन एवं श्रवण से ही प्राप्त हो सकता है।

शिव का अर्थ ही मंगलमय, कुशलमक्षेम और मुक्तिप्रदाता है। जो प्राणों पर शासन करते हैं, वे शिवात्मा कहलाते हैं। जो वायु को वश में रखते हैं, वे सदाशिव शुद्धात्मा कहलाते हैं। जो जीवन को वश में रखते हैं, वे परम शिव कहलाते हैं।

भगवान भूतभावन श्री विश्वनाथ के चरित्रों से प्राणियों को नैतिक, सामाजिक, कौटुम्बिक अनेक प्रकार की शिक्षा मिलती है। समुद्र–मन्थन में निकलने वाले कालकूट विष का भगवान् शङ्कर ने पान किया और अमृत देवताओं को दिया। राष्ट्र के नेता और समाज एवं कुटुम्ब के स्वामी का यही कर्तव्य है, उत्तम वस्तु राष्ट्र के अन्यान्य लोगों को देनी चाहिए और अपने लिये परिश्रम, त्याग तथा तरह–तरह की कठिनाइयों को ही रखना चाहिए। विष का भाग राष्ट्र या बच्चों को देने से वैमनस्य और उससे सर्वनाश हो जायेगा। शिवजी ने न विष को हृदय (पेट) में उतारा और न उसका वमन ही किया, किन्तु कण्ठ में ही रोके रखा। इसलिए विष और कालिमा भी उनके भूषण हो गये। जो संसार के हित के लिए विषपान से भी नहीं हिचकते, वे ही राष्ट्र या जगत् के ईश्वर हो सकते हैं।

समाज या राष्ट्र को कटुता को पी जाने से ही नेता राष्ट्र का कल्याण कर सकता है। परन्तु फिर भी उस कटुता को विष वमन करने से फूट और उपद्रव ही होगा। साथ ही उस विष को हृदय में रखना भी बुरा है। अमृतपान के लिए सभी उत्सुक होते है, परन्तु विषमान के लिए शिव ही है, वैसे ही फलभोग के लिए सभी तैयार रहते है, परन्तु त्याग तथा परिश्रम को स्वीकारने के लिये महापुरूष ही प्रस्तुत होते है। जैसे अमृतपान के अनुचित लोभ से देव दानवों का विद्वेष स्थिर हो गया, वैसे ही अनुचित फलकामना से समाज में विद्वेष स्थिर हो जाता है।

शिवजी का कुटुम्ब भी विचित्र ही है। अन्नपूर्णा का भण्डार सदा भरा रहा, पर भोले बाबा सदा के भिखारी। कार्तिकेय सदा युद्ध के लिए उद्यत पर गणपति स्वभाव से ही शांतिप्रिय। फिर कार्तिकेय का वाहन मयूर, गणपति का मूषक पार्वती का सिंह और स्वयं अपना नन्दी और उस पर आभूषण सर्पों के। सभी एक–दूसरे के शत्रु, पर गृहपति की छत्रछाया में सभी सुख तथा शांति से रहते हैं। घर में प्रायः विचित्र स्वभाव और रूचि के लोग रहते है, जिसके कारण आपस में खटपट चलती ही रहती है। घर की शांति के आदर्श की शिक्षा भी शिव से ही मिलती है। भगवान् शिव और अन्नपूर्णा अपने आप परम विरक्त रहकर संसार का सब ऐश्वर्य श्री विष्णु और लक्ष्मी जी को अर्पण कर देते हैं। श्रीलक्ष्मी और विष्णु भी संसार के सभी कार्यों को संभालने, सुधारने के लिए अपने आप ही अवतीर्ण होते है। गौरी–शंकर को कुछ भी परिश्रम न देकर आत्मानुसंधान के लिये उन्हें निष्प्रपंच रहने देते हैं। ऐसे ही कुटुम्ब और समाज के सर्वमान्य पुरूषों को चाहिये कि योग्यतम कुटुम्बियों के हाथ समाज ओर कुटुम्ब का सब ऐश्वर्य दे दें और उन योग्य अधिकारियों को चाहिए कि समाज के प्रत्येक कार्य–संपादन के लिए स्वयं ही अगसर हो, वृद्धों को निष्प्रंच होकर आत्मानुसंधान करने दे।

महापार्थिवेश्वर हिमालय की महाशक्तिरूपा पुत्री का श्रीशिव के साथ परिणय होने से ही विश्व का कल्याण हो सकता है। किसी भी प्रकार की शक्ति क्यों न हो, जब तक वह धर्म से परिणीत संयुक्त नहीं होती, तब तक कल्याण कारिणी नहीं होती। परन्तु आसुरी शक्ति तो तपस्या चाहती ही नहीं, फिर उसे शिव या धर्म केसे मिलेंगे? धर्मसंबंध के बिना शक्ति आसुरी होकर अवश्य ही संहार का हेतु बनेगी। प्रकृतिमाता की यह प्रतिज्ञा है कि–

"यो तां जयति संग्रामे यो मे वर्ष व्यपोहति।
यो मे प्रतिबलो लोके समे भर्त्ता भविष्यति।।"

अर्थात् संघर्ष में जो मुझे जीत लेगा, जो मेरे दर्प को चूर्ण कर देगा और जो मेरे समान या अधिक बल का होगा, वही मेरा पति होगा।

आज का संसार शुम्भ–निशुम्भ की तरह विपरीत मार्ग से प्रकृति पर विजय चाहता है। इसीलिये प्रकृति अनेक तरह से उसका संहार कर रही है। पार्थिक, आप्य, तैजस, विविधतत्वों का अन्वेषण, जल, नभ स्थल पर शासन करना, समुद्र तल के जंतुओं तक की शांति भांग करना, तरह–तरह के यंत्रों का आविष्कार और उनसे काम लेना ही आज का प्रकृति जय है। इन्द्रिय, मन, बुद्धि और उनके विकारों पर नियंत्रण करने का आज कोई भी मूल्य नहीं। प्रकृति भी कोयला, लोहा, तेल आदि साधारण से साधारण वस्तुओं को निमित्त बनाकर उन्हीं यंत्रों से उनका संहार करा रही है।

आज शिव 'अनार्य' देवता बतलाये जा रहे हैं। शिव की आराधना भूल जाने से आज राष्ट्र का भी शिव (मंगल) नहीं हो रहा है–

जरत सकल सुरवृन्द, विषम गरल जेहि पान किय।
तेहि न भजसि मतिमन्द, को कृपालु शङ्कर सरिस।।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्भागवतमहापुराणम् (गीताप्रेस गोरखपुर)
2. भक्ति सुधा (पूज्यवाद स्वमी करपात्री जी महाराज)
3. भागवत नवनीत (श्री रामचन्द्र केशव डोंगरे जी महाराज गीता प्रेस गोरखपुर)
4. श्रीरामचरितमानस (गीताप्रेस गोरखपुर)